हिन्दी विभाग

स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध

पत्र संख्या :- 06

घनानंद का काव्य-कौशल

घनानंद की कविता में अभिधा कम लक्षणा और व्यंजना अधिक है। उनकी कविता के मर्म तक पहुँचने के लिए उसके लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तक पहुँचना अनिवार्य है। अपनी कविता की विशिष्टता स्वयं घनानंद ने इस सवैया में व्यक्त की है-

उर-भौन में मौन को घूँघट कै दुरि बैठी बिराजति बात बनी।
मृदु मंजु पदारथ भूषण सों सु लसै हुलसै रसरूप मनी।
रसना-अली कान गली मधि ह्वै पधरावति लै चित-सेज ठनी।
घनआनँद बूझनि-अंक बसै बिलसै रिझवार सुजान धनी॥

इस सवैया में घनानंद ने अपनी कविता की विशिष्टता बताई है। घनानंद बताते हैं कि मेरी कविता में काफी कुछ मौन है जिसे समझने के लिए हृदय के भन्दर (अन्दर) प्रविष्ट करना होगा। क्योंकि कविता का वास वहीं है।

इसलिए वे कहते हैं कि कविता हृदय के भवन में मौन का घूँघट डाल कर अपने को छिपाए हुए है ऐसा नहीं कि इसमें बौद्धिक जगत का चित्रण नहीं हुआ पर जो भी है वह कोमल और सुन्दर है इसमें शब्दों का नहीं बल्कि उसके अर्थ का महत्व है वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ इसका गुण है इसमें अलंकार भी है इसमें रस भी है यह कविता जीभ और कान तक ही जाकर नहीं रुकती बल्कि कान की गली से होती हुई यह चित्त हृदय की शैय्या तक पहुँचती है इस कविता को कोई सहृदय व्यक्ति ही समझ सकता है यहाँ घनानंद स्पष्ट रूप में कहना चाहते हैं कि कविता शब्दों का खेल नहीं है भावानुभूति उसकी प्रमुख विशेषता है जिसका आनंद सहृदय ही ले सकता है

घनानंद की काव्य-शैली के दो भाग किए जा सकते हैं- वक्र तथा ऋजु। भक्ति संबंधी रचनाओं में ऋजु तथा रसात्मक रचनाओं में वक्र शैली का प्रयोग किया गया है।

अनु शैली में संश्लिष्ट रूप में संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है जो वक्रशैली में नहीं मिलता। भावों की मार्मिकता तथा गंभीर प्रभावशीलता वक्र शैली के गुण हैं।

घनानंद की शैली का आंतरिक रूप भाव-प्रधान है, विभाव-प्रधान या वस्तु प्रधान नहीं। भावों तथा हृदय की अंतर्दशाओं का प्रत्यक्ष वर्णन है। इनमें रमणीयता तथा अनुभूति योग्यता लक्षणा द्वारा उत्पन्न होती है। अभिलाषा का वर्णन करता हुआ कवि कहता है—

रस सागर नागर स्याम लखौं अभिलाखनि धार
मँझार बही।

सुन सूझत धीरें को तीर कहूँ पचिहार कै लाज
सिवार गही॥

यहाँ अभिलाषा का भाव 'धार' उपमान का 'धी', भाव का 'तीर' तथा लज्जा भाव 'सिवार' का रूप धारण कर प्रत्यक्ष हो जाते हैं। फलतः अभिलाषा-मग्न व्यक्ति का जलमग्न व्यक्ति के समान चित्र बन जाता है।

घनानंद की शैली में रहस्य भावना की भी झलक कहीं-कहीं प्राप्त होती है। घनानंद की यह रहस्य शैली कबीर आदि के ज्ञानमार्गी संतों की रहस्य शैली से भिन्न है। सतही तौर पर सूफी काव्य परम्परा से इसका मेल हो सकता है। पर सूफियों का अध्यात्म धर्म दर्शन से जुड़ा है और अध्यात्म सर्व साधारण दार्शनिक भावना है।

घनानंद के काव्य में यमक, श्लेष, अनुप्रास, उपमा, सांगरूपक, व्यतिरेक, अनन्वय, संदेह, विनिमय, प्रतीप, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। स्पष्ट है कि जिन अलंकारों का उन्होंने प्रयोग किया है वे प्रसिद्ध ही है। इस प्रकार के अलंकार सभी काव्य में आ सकते है। इसमें कवि की प्रवृत्ति अलंकार निरपेक्ष प्रतीत होती है।

दिनांक
31/10/2020

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय
हाजीपुर
मो०नं०- 8292227041